Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/236
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2024, Vol- 13/84

आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान एवं इसके प्रति अध्यापकों की अभिवृति का अध्ययन

सरोज प्रजापत

शोधार्थी, पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

डॉ. कपिलेश तिवारी

शोध निर्देशक, प्रौफेसर, शिक्षा पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

Paper Received On: 20 July 2024

Peer Reviewed On: 24 August 2024

Published On: 01 September 2024

Abstract

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये परिवर्तन आ रहे हैं। जहाँ किसी समय शिक्षा प्रक्रिया एकमुखी थी जिसमें अध्यापक मुख्य वक्ता होता था तथा विद्यार्थी मूल श्रोता। किसी समय शिक्षा का तात्पर्य बालक के ज्ञानात्मक पक्ष के विकास से था। वहीं आज के इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। बालकेन्द्रित शिक्षा तथा शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रयोग इसी के परिणाम है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल बालक के स्मृति स्तर का विकास का ही नही बल्कि बालक के सर्वांगींण विकास का उच्चतर उद्देश्य रखती है जिसमें बालक के शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के समुचित विकास पर बल दिया जाता है।

मूल शब्द *– आरएससीआईटी एवं अभिवृत्ति।*

प्रस्तावना –

शिक्षा शास्त्रियों ने तकनीकी विकास के फलस्वरूप आविष्कृत हुए प्रत्येक यंत्र को शिक्षा के क्षेत्र में उतार कर उसका उपयोग किया है। इसी क्रम में कम्प्यूटर का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग करना शिक्षा शास्त्रियों की पुरानी एवं स्वाभाविक इच्छा थी। परन्तु इसका सही उपयोग हो सका है पिछले दशक में जब कम्प्यूटर गणना करने वाले यंत्र से बहुत आगे मल्टीमीडिया के प्रयोग से प्रभावी बना। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में हो रहा कम्प्यूटर का उपयोग इन चरणों के बाद सामने आया है :–

1- पहले विज्ञान के क्षेत्र में सूक्ष्म गणनाओं में कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2- शिक्षा के क्षेत्र में केवल अनुसंधान आंकड़ों की सही व सटीक गणना में प्रयुक्त किया जाने लगा।

3- अभिक्रमित अनुदेशन के लिये केवल लिखित कार्य के रूप में प्रयोग हेतु सामने आया जब 1961 में कम्प्यूटर के आधार पर अभिक्रमित सामग्री की रचना की गयी। इसी क्रम में 1966 में प्राइमरी स्कूलों के बच्चों के लिये भाषा व गणित की सामग्री को अभिक्रमित अधिगम हेतु व्यवस्थित कर प्रस्तुत किया गया।

4- मल्टीमीडिया के उपयोग से चलचित्रों द्वारा आकर्षक, सरल व उत्तम ढंग से सामग्री के प्रस्तुतीकरण का साधन बना।

5- इन्टरनेट के द्वारा तत्काल सूचना पहुंचाने वाला साधन बना। शिक्षा के क्षेत्र में बेवसाइट का प्रयोग शिक्षार्थी की विशाल लाइब्रेरी की आवश्यकता की पूर्ति करता दिखाई दिया।

6- टी० वी०, रेड़ियो, वी० सी० आर, प्रोजेक्टर आदि के रूप में कम्प्यूटर के काम में आने से कम्प्यूटर ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अन्तर्गत एकमात्र पूर्ण दृश्य श्रव्य सामग्री का स्थान लेने में सफलता प्राप्त की।

आर.एस.सी.आई.टी. का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग :-

वर्तमान में कम्प्यूटर के शिक्षा में उपयोग के महत्त्व को समझ कर विभिन्न कदम उठाये गये हैं। जिनके अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य कर ही दिया है। साथ ही सेवारत अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करके प्रशिक्षित किया जा रहा है। कम्प्यूटर इंजिनियरिंग तो अलग शाखा के रूप में पहले से ही प्रचलित हैं।

आर.एस.सी.आई.टी. का शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों में तीन प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है –

1- प्रशासनिक सहयोगी के रूप में

2- शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में

3- कम्प्यूटर आधारित अधिगम द्वारा शिक्षक के रूप में

प्रशासनिक सहयोगी के रूप में (Computer as Administrative Role)**:-**

जहां आजकल विभिन्न प्रशासनिक क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने भ्रष्टाचार में रोक लगाने सहित प्रत्येक कार्य में समानता, सरलता एवं पारदर्शिता लाने के लिये भरपूर सहयोग किया है वहीं विद्यालयों में प्रशासनिक कार्य में उल्लेखनीय सहयोग कर सकता है। जिससे विद्यालय के प्रशासन संबंधी कार्य को उत्तम ढंग से चलाया जा सके।

शिक्षण में सहायक सामग्री के महत्त्व को सभी शिक्षाविदों ने स्वीकारा है। ऐसे में आवश्यक होती है उत्तम सहायक सामग्रियों के चयन की। अनेक सहायक सामग्रियों का प्रयोग

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

करने के लिए समय भी अधिक चाहिए तथा साधन भी अधिक चाहिए। ऐसे में कम्प्यूटर का प्रयोग बहुउपयोगी व प्रभावी सहायक सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत आने वाली सभी सहायक सामग्रियों के गुणों को अपने में समेटे कम्प्यूटर का उचित प्रयोग शिक्षार्थियों पर उत्तम प्रभाव डाल सकता है।

सहायक सामग्री के रूप में (Computer as Teaching Aid) :-

शिक्षण में सहायक सामग्री के महत्त्व को सभी शिक्षाविदों ने स्वीकारा है। ऐसे में आवश्यकता होती है उत्तम सहायक सामगियों के चयन की। अनेक सहायक सामग्रियों का प्रयोग करने के लिये समय भी अधिक चाहिए तथा साधन की अधिक चाहिए। ऐसे में कम्प्यूटर का प्रयोग बहुउपयोगी व प्रभावी सहायक सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया के अन्तर्गत आने वाली सभी सहायक सामग्रियो के गुणों को अपने में समेटे कम्प्यूटर का उचित प्रयोग शिक्षार्थियों पर उत्तम प्रभाव डाल सकता है।

इस प्रकार कम्प्यूटर की बहुउपयोगिता व बढ़ते हुए क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए आर. एस.सी.आई.टी. की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

अध्ययन का महत्व :-

समस्या का शैक्षिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि शिक्षा का क्या महत्व है? विभिन्न दार्शनिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के महत्व को इस प्रकार उल्लेखित किया है। शिक्षा हमें अपने सम्पूर्ण परिवेश के प्रति सजग बनाती है। आज सम्पूर्ण विश्व तथा विशेष रूप से हमारे देश में विविध संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आर्थिक मूल्यों में क्रान्ति हो रही है। इस भीषण संक्रमण काल में बालक को सांस्कृतिक, राष्ट्रीय संकल्पनाओं के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्तित्व सम्पन्न बन सके, यही शिक्षक का लक्ष्य है। शिक्षा से शारीरिक, मानसिक, स्वाभाविक, समायोजन शक्तियों का समन्वित विकास होता है। इनके समन्वय के अभाव में शिक्षा अधूरी व अपंग रहती है।

शिक्षकों की बहुमुखी प्रतिभा उनकी योग्यता, क्षमता, रूचियों और ज्ञान के आधार पर बनती है। आने वाले समय की क्या आवश्यकताएं होगी? बच्चे उनका समाना कैसे कर सकेंगे? उनके लिये इस समय क्या चीजें उपलब्ध करवानी आवश्यक है तथा कैसे उपलब्ध हो सकेंगे? इन बातों के बारे में शिक्षक को लगातार जागरूक रहना पड़ता है। इन्हीं को ध्यान में रखकर शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। यदि शिक्षक को आर.एस.सी.आई.टी. का ज्ञान है तो वह विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को इस संबंध में जागरूक कर सकता है तथा इसकी महती आवश्यकता के बारे में अधिक अच्छे ढंग से स्पष्ट कर सकता है।

देश के किसी भी प्रांत के पाठ्यक्रम को देखें तो कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य या वैकल्पिक विषय के रूप में अवश्य स्थान दिया गया है। विभिन्न अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि कम्प्यूटर शिक्षा के शिक्षकों में आत्मविश्वास जागृत होता है। यह व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने मे सहायक होता है। साथ ही विभिन्न क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से समाधान निकालने की प्रवृत्ति बनती है।

अभिवृत्ति एक मनोसामाजिक सम्प्रत्यय है। अपने चारों ओर फैले हुए वातावरण में अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, धारणाओं, विचारधाराओं, नारों आदि से हमारा सम्बन्ध होता है और इन

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सम्बन्धों में सामान्यतया हमारे मनोभाव कुछ ऐसे होते हैं कि इनमें से हम किसी को पसंद नहीं करते हैं। किसी को पसंद करते हैं या इनमें से किसी विषय में तटस्थ रहते हैं। सामान्यतया हम विष्वविद्यालयों, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों आदि के प्रति अलग–अलग व्यवहार करते हैं। इन्हीं व्यवहारों के द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर हम इन वस्तुओं के विषय में अपनी रुचि/अभिरुचि को प्रकट करते हैं। यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के द्वारा अनुभवों के आधार पर अर्जित की जाती हैं और ये कोई जन्मजात, विशेषता, कारक या क्षमता नहीं है। अतः इसके निर्माण में परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षकों का बहुत बड़ा हाथ होता है।

इस प्रकार अनुसंधानकर्त्री को यह ज्ञान करने की आवश्यकता अनुभव हुई कि आर.एस. सी.आई.टी. (RS-CIT) के प्रति अध्यापकों की अभिवृति कैसी है? अतः अनुसंधानकर्त्री ने इस विषय को अनुसंधान के रूप में चुनने का निर्णय किया।

अध्ययन का औचित्य :–

अनुसंधानकर्त्री ने वर्तमान में आर.एस.सी.आई.टी. के औचित्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

1. शिक्षार्थियों के लिये –

अ. शिक्षार्थियों का आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के विभिन्न पहलुओं को सरलता से जान सकेंगे।

ग. शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा हो सकेगा।

2. शिक्षकों के लिये –

अ. शिक्षकों में आर.एस.सी.आई.टी. के महत्व से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

ब. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगा।

स. शिक्षकों में लिंग संबंधी अन्तर को नजरअंदाज करने की भावना का उदय होगा।

द. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रति ग्रामीण व शहरी का भेदभाव दूर करने के कारणों की जानकारी होगी।

3. शिक्षा नीति निर्धारकों के लिये –

अ. आर.एस.सी.आई.टी. के प्रसार में सहायता प्राप्त होगी।

ब. प्रसारित किये गये संसाधनों के उपयोग की सुनिश्चितता होगी।

स. विभिन्न प्रकार की योजनाओं में आर.एस.सी.आई.टी. की सहायता ले सकेंगे।

अनुसंधानकर्त्री की नजर में यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालयोपयोगी, समाजोपयोगी एवं अध्यापकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम RS-CIT के प्रति सरकारी एवं

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निजी अध्यापकों की अभिवृत्ति को जान सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन :–

''आर.एस.सी.आई.टी. (RS-CIT) का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान एवं इसके प्रति अध्यापकों की अभिवृति का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन :–

1. शोध में राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले को सम्मिलित किया गया है।
2. शोधार्थी द्वारा उदयपुर जिले के 50 सरकारी व 50 निजी कुल 100 अध्यापकों का चयन किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अभिवृत्ति मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के मापन के लिए स्वनिर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात मान की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारणी संख्या – T.IV.1

सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर .05	सार्थकता स्तर .01
सरकारी	50	24.52	6.34	2.67		सार्थक अन्तर हैं।
निजी	50	19.64	4.57			

($df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$)

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

आरेख संख्या – 1

सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डारेखीय प्रदर्शन

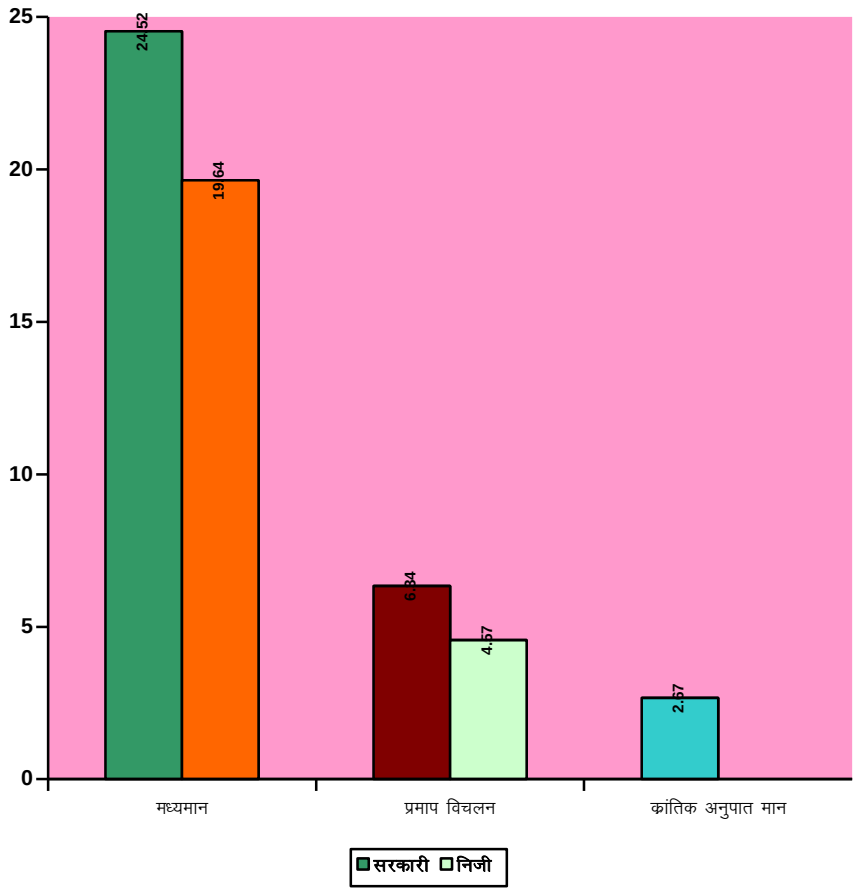

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निष्कर्ष निरूपण –

1. सरकारी एवं निजी अध्यापकों की RSCIT के प्रति अभिवृत्ति में 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. *अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005) : ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327*
2. *कपिल, एच के. (1979) : अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–23*
3. *कोठारी, सी.आर. (2008) : ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या–2*
4. *जायसवाल, सीताराम (1994) : 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221*
5. *ढोढियाल, एस. पाठक (1990) : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या–51*
6. *पाठक,पी.डी. (2007) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ.सं. 245, 552,450*
7. *भटनागर, आर.पी.(1973) : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या–107*
8. *भटनागर, सुरेश, (1996) : ''शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. स. 440.*

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies